जनजातीय बहुल इलाकों के खिलाड़ियों का दबदबा

शिवेन्द्र चतुर्वेदी

देश के कुछ राज्यों विशेषतौर पर झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, उत्तर पूर्वी राज्यों तथा महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात और पश्चिम बंगाल के जनजातीय बहुल हिस्सों से भी बहुत से ऐसे खिलाड़ी उभर कर आए हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपने राज्य तथा देश का नाम रोशन किया। खास बात ये है कि इन जगहों पर विषम भौगोलिक परिस्थितियों और आम तौर पर विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं की अपेक्षाकृत सीमित उपलब्धता के बावजूद, जनजातीय बहुल क्षेत्रों से उभरकर आने वाले तमाम खिलाड़ियों ने बार-बार इस कहावत को सही साबित किया है कि ''प्रतिभा कभी भी पराश्रय की मोहताज नहीं होती है।''

भारत, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता संपन्न देश है जहाँ रहने वालों का धर्म, भाषाएँ, वेशभूषा और खान-पान अलग-अलग होने के बावजूद, भारतीयता की भावना, देशवासियों को एक सूत्र में पिरोने का काम करती है यानी अनेकता में एकता है, भारत की विशेषता। अपनेपन की इस भावना को और सुदृढ़ बनाता है खेल का मैदान अर्थात् 'खेल सिखाता मेल'। हाल के वर्षों में हमारे देश में खेलों को लेकर नया उत्साह देखने को मिला है जिससे ओलम्पिक्स, एशियाई खेल और राष्ट्रमंडल खेल तथा अन्य विश्वस्तरीय प्रतियोगिताओं में बेहतर परिणाम देखने को मिल रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भारत को विश्व स्तर पर अग्रणी देश बनाने के क्रम में, खेलों एवं खिलाड़ियों की प्रगति और प्रोत्साहन को लगातार अहमियत दी है। यूँ तो संपूर्ण भारत में खेलों को लेकर खासी जागरुकता है, लेकिन देश के कुछ राज्यों विशेषतौर पर झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, उत्तर पूर्वी राज्यों तथा महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात और पश्चिम बंगाल के जनजातीय बहुल हिस्सों से भी बहुत से ऐसे खिलाड़ी उभर कर आए हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपने राज्य तथा देश का नाम रोशन किया। खास बात ये है कि इन जगहों पर विषम भौगोलिक परिस्थितियों और आम तौर पर विश्वस्तरीय खेल सुविधाओं की अपेक्षाकृत सीमित उपलब्धता के बावजूद, जनजातीय बहुल क्षेत्रों से उभरकर आने वाले तमाम खिलाड़ियों ने बार-बार इस कहावत को सही साबित किया है कि ''प्रतिभा कभी भी पराश्रय की मोहताज नहीं होती है।'' एक सच्चा कर्मयोगी, अपनी लगन, परिश्रम और संकल्प से खुद की कामयाबी का रास्ता ढूंढता है और उस पर सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए, नए आयाम स्थापित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय शोध संस्था के.पी.एम.जी. की रिपोर्ट के अनुसार विश्व के विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था में खेलों का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 1 से 5 प्रतिशत अनुमानित किया गया है। यहाँ तक कि वैश्विक मंदी के दौरान भी, वर्ष 2009-13 के मध्य, खेल बाजार 7 प्रतिशत की

जयपाल सिंह मुंडा
3 जनवरी 1903 - 20 मार्च 1970

लेखक वरिष्ठ खेल कमेंटेटर हैं। ईमेल: shivendra68@gmail.com

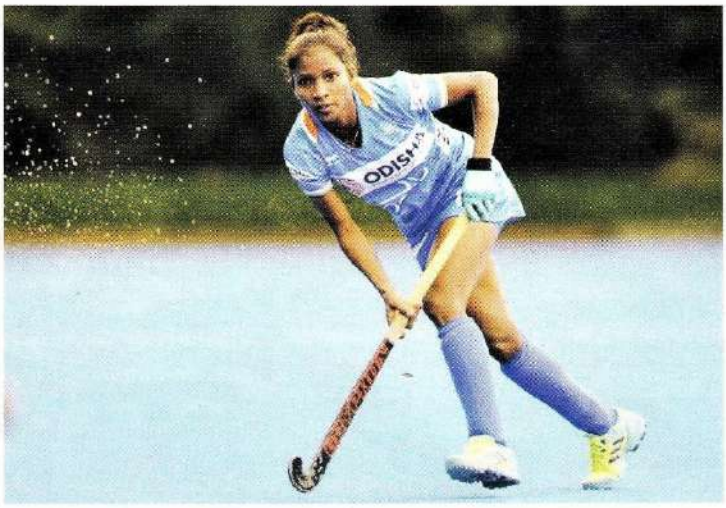

सलीमा टेटे (बाएँ) और निक्की प्रधान (दाएँ), जो क्रमशः आदिवासी बहुल सिमडेगा और खूंटी जिलों से आती हैं, भारतीय महिला हॉकी टीम की प्रमुख खिलाड़ी थीं जिन्होंने टोक्यो में ऐतिहासिक और उत्साही प्रदर्शन किया।

दर से बढ़ा, जो कि विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि से अधिक रहा है। साथ ही खेल क्षेत्र श्रम-आधारित होने के कारण रोज़गार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। विशेषकर खेल खुदरा व्यापार का क्षेत्र, जो अमेरिका में लगभग 11 प्रतिशत तथा भारत में लगभग 6 प्रतिशत रोज़गार प्रदान करने में सहायक है। अतः खेल, खेल-शिक्षा, खेल अनुसंधान, खेल चिकित्सा, खेल-उद्योग, खेल व्यापार तथा खेल-सेवाओं को प्रोत्साहित करके राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक हो सकते हैं।

प्रारम्भ से ही जनजातीय बहुल इलाकों के खिलाड़ियों का दबदबा

हमारे देश के खेल इतिहास में हॉकी को बेहद विशिष्ट स्थान हासिल है और उसका कारण है 1928 के एम्स्टरडम्स ओलंपिक्स से 2021 के टोक्यो ओलंपिक्स तक भारत द्वारा हॉकी में जीते गए 12 पदक जिसमें 8 स्वर्ण, 1 रजत और 3 कांस्य पदक शामिल है। भारत ने अब तक ओलंपिक खेलों में कुल 10 स्वर्ण सहित 35 पदक जीते हैं जिनमें से 34 प्रतिशत पदक, सिर्फ हॉकी में भारतीय खिलाड़ियों ने हासिल किए हैं। दरअसल 1928 से 1956 तक लगातार 6 ओलंपिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम ने स्वर्ण पदक हासिल करके, सारी दुनिया में तहलका मचा दिया था। भारतीय हॉकी के उस स्वर्णिम काल में देश को पहला ओलंपिक स्वर्ण दिलाने वाली टीम के कप्तान की भूमिका निभाई थी जयपाल सिंह मुंडा ने। वर्तमान झारखंड की राजधानी रांची के पास 3 जनवरी 1903 को जन्मे जयपाल सिंह असाधारण प्रतिभा के धनी थे और 1925 में ऑक्सफोर्ड ब्लू का खिताब पाने वाले, हॉकी के एकमात्र अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी थे। खिलाड़ी होने के साथ-साथ वे एक जाने माने राजनीतिज्ञ, पत्रकार, लेखक, संपादक और शिक्षाविद् भी थे। हॉकी के मैदान पर टीम की रक्षापंक्ति में प्रमुख भूमिका निभाने वाले जयपाल सिंह मुंडा, देश की संविधान सभा के भी सदस्य रहे और आजीवन, जनजातीय लोगों के कल्याण के लिए प्रयासरत रहे।

1928 के एम्स्टरडम्स ओलंपिक्स के 52 साल बाद, 1980 के मास्को ओलंपिक खेलों में भारतीय टीम ने हॉकी में 8वां और अंतिम स्वर्ण पदक जीता और उस समय भी, भारतीय टीम के एक महत्वपूर्ण सदस्य थे झारखंड के जनजातीय बहुल ज़िले सिमडेगा से आने वाले सिल्वेनस डुंग डुंग। 27 जनवरी 1949 को जन्में सिल्वेनस डुंग डुंग 1965 में भारतीय सेना में शामिल हुए, देश की सेवा की, ओलंपिक स्वर्ण विजेता बने और 2016 में, उन्हें हॉकी के खेल में जीवनपर्यंत योगदान के लिए द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पिछले वर्ष टोक्यो ओलंपिक खेलों में 41 साल के लंबे अंतराल के बाद भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने पोडियम फिनिश करते हुए कांस्य पदक हासिल किया और इस टीम के उपकप्तान थे। ओड़िशा के जनजातीय बहुल ज़िले सुंदरगढ़ में जन्में बीरेंदर लकरा। एशियाई खेलों की स्वर्ण और रजत पदक विजेता भारतीय टीम का हिस्सा रहे वीरेंदर लकरा का पूरा परिवार ही हॉकी से जुड़ा है। बीरेंदर के बड़े भाई बिमल भी मिडफील्डर के तौर पर भारत के लिए खेल चुके हैं और उनकी बहन असुंता लकरा, भारतीय महिला हॉकी टीम का नेतृत्व भी कर चुकी हैं।

हॉकी की नर्सरी

खास बात ये है कि सिमडेगा ज़िले को आज हॉकी की नर्सरी कहा जाता है और देश के जनजातीय बहुल अंचल में स्थित इस ज़िले में हॉकी के प्रशिक्षण की अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। संभवतः यही कारण है कि ब्यूटी डुंगडुंग, प्रमोदिनी लकरा, रजनी करकेरा, महिमा टेटे, दीपिका सोरेंग और काजल बारा जैसे युवा खिलाड़ी, भारतीय महिला हॉकी में शामिल होने की ओर आगे बढ़ते नज़र आ रहे हैं। सिमडेगा ज़िले का विवरण वहाँ की धरती से अवतरित हुए एक और शानदार हॉकी खिलाड़ी माइकल किंडो के जिक्र के बिना अधूरा रहेगा। अर्जुन पुरस्कार से नवाज़े गए रक्षा पंक्ति के बेहतरीन खिलाड़ी माइकल किंडो, 1972 के म्यूनिख ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम के सदस्य थे। 1971, 1973 और 1975 के हॉकी विश्व कप में भारतीय टीम ने कांस्य, रजत और स्वर्ण पदक

भारत ने अब तक ओलंपिक खेलों में कुल 10 स्वर्ण सहित 35 पदक जीते हैं जिनमें से 34 प्रतिशत पदक, सिर्फ हॉकी में भारतीय खिलाड़ियों ने हासिल किए हैं। दरअसल 1928 से 1956 तक लगातार 6 ओलंपिक खेलों में भारतीय हॉकी टीम ने स्वर्ण पदक हासिल करके, सारी दुनिया में तहलका मचा दिया था। भारतीय हॉकी के उस स्वर्णिम काल में देश को पहला ओलंपिक स्वर्ण दिलाने वाली टीम के कप्तान की भूमिका निभाई थी जयपाल सिंह मुंडा ने।

हासिल किए थे और उस टीम का अहम हिस्सा थे सिमडेगा के सपूत माइकल किंडो।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने टोक्यो में कांस्य पदक जीता और भारतीय महिला हॉकी टीम, बेहद यादगार और जीवट भरे प्रदर्शन के बावजूद टोक्यो ओलंपिक्स में कांस्य पदक से चूक गई। टोक्यो में ऐतिहासिक प्रदर्शन करने वाली भारतीय महिला हॉकी टीम की महत्वपूर्ण सदस्या थीं सलीमा टेटे और निक्की प्रधान, जो जनजातीय बहुल सिमडेगा और खूंटी ज़िलों से आती हैं। दरअसल 2016 के रियो ओलंपिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली निक्की प्रधान, झारखंड की पहली महिला हॉकी खिलाड़ी थीं जिन्हें खेलों के इस महा आयोजन का हिस्सा बनने का गौरव हासिल हुआ था।

तीरंदाजी में देश का परचम

हॉकी के अलावा तीरंदाजी एक ऐसा खेल है जिसमें जनजातीय बहुल इलाकों से बहुत-सी प्रतिभाएँ उभर कर सामने आई और उन्होंने तमाम विश्वस्तरीय प्रतियोगिताओं में देश का परचम फहराया है। दीपिका कुमारी ऐसी ही एक खिलाड़ी हैं जो अपनी नैसर्गिक प्रतिभा और मेहनत के संयोजन से दुनिया की नंबर एक तीरंदाज बनी। पद्मश्री और अर्जुन पुरस्कार से नवाज़ी जा चुकी दीपिका ने 2012 में लंदन, 2016 में रियो तथा 2021 में टोक्यो ओलंपिक खेलों में देश का प्रतिनिधित्व किया। सच्चाई यही है कि सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने के लिए दीपिका ने लम्बा रास्ता तय किया है और बचपन में जब उनके पास अभ्यास के लिए तीर कमान उपलब्ध नहीं होते थे, वे पत्थर से आम के फल तोड़कर, अपना निशाना दुरुस्त करती थी।

जनजातीय बहुल इलाको से आने वाले प्रतिभाशाली तीरंदाजों में 'गोल्डन ब्वाय' के नाम से मशहूर हुए 'गोरा हो' का नाम भी शामिल है, जिन्हें 2015 में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से नवाज़ा गया था। झारखंड से आने वाले प्रसिद्ध तीरंदाजों में संजीव कुमार सिंह का नाम भी शामिल है जिन्हें खिलाड़ी के तौर पर अर्जुन पुरस्कार और फिर प्रशिक्षक के तौर पर द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इनके अलावा रिमिल बुरिउली, पूर्णिमा महतो, लक्ष्मीरानी माझी, कोमालिका बारी तथा संगीता कुमारी कुछ ऐसे तीरंदाज है जो देश के सबसे युवा राज्यों में शामिल झारखंड से निकल कर, अंतर्राष्ट्रीय तीरंदाजी परिदृश्य पर छा गए। इसी तरह राजस्थान से लिंबाराम, श्यामलाल मीणा, रजत चौहान और छत्तीसगढ़ से सानंद मित्रा कुछ ऐसे तीरंदाज हैं जिन्होंने अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में देश के लिए पदक जीते और भारत का परचम फहराया।

टोक्यो 2020 ओलंपिक में बीरेंद्र लाकड़ा

उपरोक्त खिलाड़ियों की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कामयाबी इसलिए और भी प्रशंसनीय कही जा सकती है कि देश के जनजातीय बहुल इलाकों से आने वाले ज्यादातर खिलाड़ी या तो किसान परिवार से आते हैं या फिर ऐसी पृष्ठभूमि से, जहाँ जीवनयापन, अपने आप में संघर्ष का पर्याय कहा जा सकता है और खेलकूद का मैदान तथा वहाँ उपलब्ध होने वाली सुविधाएँ, ऐसे खिलाड़ियों के लिए सपने से ज्यादा कुछ नहीं होती। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद अगर जनजातीय क्षेत्रों से खिलाड़ी आगे निकले हैं और उन्होंने अपनी एक खास पहचान बनाई है, तो यह निश्चित तौर पर, उनके कड़े संघर्ष, अथक परिश्रम, जन्मजात प्रतिभा और कभी हार न मानने वाली प्रवृत्ति का ही परिचायक कहा जा सकता है।

खिलाड़ियों को प्रोत्साहन की नीतियाँ

जनजातीय क्षेत्रों में मौजूद प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान, उनके संवर्धन एवं प्रशिक्षण के लिए उचित सुविधाएँ उपलब्ध कराना और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन के लिए उन्हें समुचित माहौल उपलब्ध कराने का केंद्र सरकार तथा संबंधित राज्य सरकारों द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहा है। इसी क्रम में छत्तीसगढ़ सरकार के खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा लगभग 5 वर्ष पहले एक विस्तृत नीति की घोषणा की गई थी। दरअसल 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ के गठन के बाद ही, वर्ष 2001 में खेल नीति का ऐलान हुआ था। इसका लक्ष्य राज्य में खेल संस्कृति का सृजन करने के साथ-साथ विभिन्न खेल योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियान्वयन पंचायत स्तर तक करना था। छत्तीसगढ़ राज्य में विभिन्न खेलों एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहित एवं विकसित करने हेतु छत्तीसगढ़ खेल नीति 2017 के अन्तर्गत रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने पर ज़ोर दिया गया है जिसके तहत राज्य के सभी ज़िलों में विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट सामर्थ्यवान एवं क्षमतावान खिलाड़ियों की पहचान करना शामिल है।

साथ ही विभिन्न ज़िलों में आयोजित होने वाली खेल प्रतियोगिताएँ, ज़िले के रहवासियों के मध्य खेल के प्रति रुझान, ज़िले के किशोर एवं युवाओं की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के अनुरूप उपयुक्त खेलों की पहचान कर संबंधित ज़िले में विभिन्न खेलों को प्रोत्साहित किया जाना भी, छत्तीसगढ़ खेल नीति का अहम उद्देश्य है।

राज्य में खेलों एवं खिलाड़ियों को विकसित करने तथा छत्तीसगढ़ को विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खेलों में अपनी गौरवमयी पहचान को बढ़ाने हेतु राज्य के शासकीय, अर्द्धशासकीय, निजी क्षेत्र की संस्थाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, गैर सरकारी संस्थाओं, अन्य राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों, निर्वाचित जन प्रतिनिधियों एवं प्रसिद्ध व्यक्तियों को एक खेल एवं एक खिलाड़ी या कोई भी एक (खिलाड़ी या खेल) को गोद लेने हेतु प्रोत्साहित किए जाने का अभिनव प्रयास भी, खेल नीति का हिस्सा है।

वित्त संयोजन के तहत राज्य की ज़िला खनिज निधि का एक निश्चित प्रतिशत उपयोग खेलों एवं खिलाड़ियों को विकसित तथा प्रोत्साहित करने में किए जाने का प्रावधान है। इस नीति के तहत खेल संवर्धन परिषद, खेल संघों तथा स्थानीय पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाया जाना आवश्यक है ताकि वे विभिन्न खेलों एवं खिलाड़ियों को लोकप्रिय बना कर, लोगों को खेल-कूद की गतिविधियों से जोड़ सकें।

छत्तीसगढ़ की तरह मध्य प्रदेश में भी शासकीय स्तर पर जनजातीय बहुल क्षेत्रों में खेल प्रतिभाओं को बढ़ावा देने का सक्रिय प्रयास हो रहा है। प्रदेश में प्रथम खेल नीति वर्ष 1989 में बनाई गई थी तथा 5 वर्ष पश्चात उसका मूल्याँकन कर वर्ष 1994 में पुनः नई खेल नीति बनाई गई। इस खेल नीति में प्रदेश के खेलों के विकास के विभिन्न पहलू शामिल थे। मध्य प्रदेश में खेलों के संवर्धन के लिए घोषित नवीनतम नीति का उद्देश्य जीवन में खेलों एवं शारीरिक शिक्षा की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए, युवाओं की प्रतिभा एवं ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करना है। नागरिकों में खेल, युवा तथा साहसिक गतिविधियों के प्रति उत्साह एवं इसके माध्यम से राष्ट्रीयता, मैत्री, सामाजिक समरसता तथा सौहार्दपूर्ण प्रतिस्पर्धा की भावना को जागृत करना भी, खेल नीति का उद्देश्य कहा जा सकता है। खेलों में मध्य प्रदेश को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाना तथा प्रदेश के युवाओं की ऊर्जा को राज्य एवं देश के विकास के लिए प्रोत्साहित कर उसका उपयोग करना खेल नीति में निहित है।

छत्तीसगढ़ राज्य में विभिन्न खेलों एवं खिलाड़ियों को प्रोत्साहित एवं विकसित करने हेतु छत्तीसगढ़ खेल नीति 2017 के अन्तर्गत रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने पर ज़ोर दिया गया है जिसके तहत राज्य के सभी ज़िलों में विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट सामर्थ्यवान एवं क्षमतावान खिलाड़ियों की पहचान करना शामिल है।

मध्य प्रदेश खेल संवर्धन नीति के तहत कुछ नीति निर्धारक बिन्दुओं की पहचान की गई है जिसमें प्रमुख है अधोसंरचना का विकास। इसके अन्तर्गत प्रत्येक ग्राम में, पंचायत को खो-खो, कबड्डी, कुश्ती एवं वॉलीबाल आदि खेलों के लिए एक खेल मैदान चरणबद्ध तरीके से तैयार करना प्रस्तावित है। इसके अलावा ऐसे ज़िला मुख्यालय, जिनमें परिपूर्ण खेल परिसर नहीं है, उनमें परिपूर्ण खेल परिसर का निर्माण किया जाना भी प्रस्तावित किया गया है।

राष्ट्रीय खेलों में किए गए प्रदर्शन, प्राप्त पदकों तथा खेल सुविधाओं की वर्तमान में उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए खेलों पर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए, जिसमें एथेलेटिक्स, कुश्ती, खो-खो, कबड्डी, वालीबॉल, तैराकी, केनोईंग-क्याकिंग, ताईक्वांडो, जूडो, हॉकी, बास्केटबाल, निशानेबाजी तथा घुड़सवारी शामिल है। आदिवासी क्षेत्रों में कबड्डी, रस्साकसी, तेज़ दौड़ तथा ऊँचीकूद, कुश्ती तथा धनुर्विद्या जैसे खेलों में अन्तरग्राम पंचायत प्रतियोगिताएँ आयोजित करना एवं उक्त आयोजन के लिए, खेल एवं युवक कल्याण विभाग द्वारा आदिवासी उपयोजना के अन्तर्गत विभागीय बजट में प्रावधान किया जाना भी प्रस्तावित है।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में, खास तौर पर जनजातीय बहुल इलाकों में खेल नीति के कार्यान्वयन और समुचित प्रोत्साहन के सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। पिछले दिनों मध्य प्रदेश के हर्दा ज़िले में 15 जनजातीय बहुल गाँवों की बालिकाओं के बीच 'गर्ल्स प्रीमियर लीग क्रिकेट प्रतियोगिता' के आयोजन की उत्साहजनक खबर आई, जिसे लैंगिक समानता या जेंडर इक्वेलिटी का भी एक उदाहरण कहा जा सकता है। इस अनोखी क्रिकेट प्रतियोगिता में टीमों के नाम हर्दा ज़िले के गाँवों के नाम पर रखे गये थे, जिनमें 13 से 25 वर्ष आयु वर्ग की 11-11 बालिकाएँ शामिल थीं। खास बात ये थी कि इससे पहले इन बालिकाओं ने अपने गाँव की सीमाओं से बाहर कभी कदम नहीं रखा था और न ही कभी क्रिकेट के खेल का विधिवत प्रशिक्षण लिया था। इसके बावजूद इन सभी ने अपने खेतों में अभ्यास करते हुए प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और उसे अपने जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बताया।

देश के खेल मानचित्र पर ओडिशा राज्य ने भी अपनी खास पहचान बनाई है और बहुत से बेहतरीन खिलाड़ी, ओडिशा के जनजातीय बहुल क्षेत्रों से उभर कर सामने आए हैं। इन्हीं में से एक जाना पहचाना नाम है भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान दिलीप टिर्की का। तीन ओलंपिक खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले दिलीप टिर्की ने 400 से ज्यादा अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले और उन्हें सरकार द्वारा पद्मश्री तथा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। ओडिशा के सुंदरगढ़ ज़िले में जन्में दिलीप टिर्की 1998 में बैंकाक एशियाई खेलों में स्वर्ण तथा 2002 में बुसान में रजत पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम में शामिल थे। दिलीप के पिता विंसेंट टिर्की भी हॉकी खिलाड़ी थे और उनके दो जुडवां भाई, अनूप और अजीत टिर्की, भारतीय रेलवे की हॉकी टीम के सदस्य रहे। दरअसल दिलीप टिर्की पद्मश्री से नवाज़े जाने वाले और 3 ओलंपिक खेलने वाले चुनिंदा खिलाड़ियों में शामिल हैं और 2012 से 2018 तक राज्य सभा के सदस्य भी रहे।

देश के लिए खेल के मैदान पर भविष्य की आशा के रूप में गुमला ज़िले की एथलीट सुप्रीती कच्छप का नाम लिया जा सकता है। बेहद सामान्य आदिवासी पृष्ठभूमि से आने वाली सुप्रीति ने एथलेटिक्स में लगातार बेहतर प्रदर्शन किया है और अब वे अगस्त में कोलंबिया में होने वाली अंडर-20 विश्व चैंपियनशिप की तैयारी कर रही हैं। गुमला ज़िले से ही आती है कार्तिक ओरांव की दो बेटियाँ ममता बारा और बरखा रानी बारा। जीवन की तमाम विसंगतियों को पीछे छोड़ते हुए ये दोनों बहने फुटबाल के मैदान पर अपनी कामयाबी की कहानी लिखने को तत्पर दिख रही हैं और खेलो इंडिया गेम्स तथा अन्य प्रतियोगिताओं में लगातार बेहतर प्रदर्शन, उनके उज्ज्वल भविष्य का संकेत दे रहा है।

कुछ ऐसी ही कहानी झारखंड के किसान परिवार की बेटी सुमति कुमारी की है। अक्सर खेती में अपने परिवार का हाथ बंटाने वाली सुमति ने जब फुटबाल मैदान का रुख किया तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे ए.एफ.सी. महिला एशिया कप तथा कई अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं।

देश के जनजातीय बहुल क्षेत्रों से लगातार उभरकर आने वाली खेल प्रतिभाओं की प्रेरणादायक गाथाएँ इस बात का स्पष्ट संकेत दे रही हैं कि आज का भारत बदल रहा है। देश में खेलों के क्षेत्र में समावेशी विकास का नया अध्याय शुरू हो चुका है जिसमें समाज के हर वर्ग का अपना विशिष्ट योगदान है। इसके साथ ही केंद्र सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा भी लगातार इस बात के प्रयास किए जा रहे हैं कि देश के सुदूर अंचलों में स्थित जनजातीय बहुल इलाकों से प्रतिभाओं की पहचान करके, उन्हें समुचित प्रशिक्षण, अत्याधुनिक उपकरण और सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ। ईमानदारी से किए जाने वाले ऐसे प्रयासों से न केवल प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को बढ़ावा मिलेगा, बल्कि विश्व मानचित्र पर एक खेल महाशक्ति के रूप में उभरने का भारत का सपना भी साकार हो सकता है। ■